नक़्क़ाशीदार केबिनेट

पुष्पा सक्सेना

कल रात साढ़े बारह बजे सुधा जी का उपन्यास समाप्त किया। शुरू तो पहले किया था, पर बीच में दीपावली और अतिथियों के कारण बीच-बीच में छोड़ना विवशता थी। विराम देने के बाद भी मन अटका रहता था, आगे क्या होने वाला है। उपन्यास की पृष्ठभूमि पंजाब और अमरीका है। उपन्यास का शीर्षक ही एक रहस्यात्मकता का सन्देश देता सा प्रतीत होता है। इस केबिनेट के भीतर क्या है, जानने की उत्सुकता होना स्वाभाविक ही है। सारांश में इसकी कहानी बताते हुए मैं इसके अन्य पक्षों को उजागर करूँगी; जिन्होंने इस उपन्यास को पठनीय और रोचक बनाया। बेहद रहस्यनीय उपन्यास है, शुरू से अंत तक हृदय और बुद्धि को बाँधे रखता है। उपन्यास जब तक समाप्त नहीं होता, बेचैनी बनी रहती है। ग़ज़ब की क़िस्सागोई है। विदेशी प्रवेश और भारत की समस्याओं को लेकर यह अद्भुत उपन्यास है; जो एक प्रवासी लेखक ही लिख सकता है।

उपन्यास के शुरू में ही अफ़रातफ़री का माहौल यह नहीं बताता कि क्या होने वाला है। लोग घरों की तरफ़ जा रहे हैं। बच्चों के स्कूल, कॉलेज, ऑफ़िस सब बंद हो गए हैं, पर क्यों? मन में उत्सुकता जागती है। अंतत: टी.वी पर आ रही सूचना से आने वाले विनाशकारी तूफ़ान के विषय में जानकारी मिलती है। भारी बर्फ़ीले तूफ़ान में, सौ मील प्रति घंटे की रफ़्तार से तेज़ हवाओं के साथ वर्षा मानों प्रलय का दृश्य साकार करती है। इस तूफ़ान का इतना सजीव चित्रण किया गया है कि पाठक स्वयं को भी उस तूफ़ान को झेलता अनुभव करता है। खिड़की से घर के अन्दर आया वृक्ष डराता है। पानी की तेज़ बौछार से घर में पानी भर जाने का संकट पाठक अनुभव करता है। उस अँधेरी तूफ़ानी रात में रोने- चिल्लाने की आवाज़ें, हवा में उड़ते कपड़े, खिलौने, तूफ़ान की भयंकरता स्पष्ट करते हैं।

इस भयंकर तूफ़ान के बावजूद पुलिस द्वारा हेलिकॉप्टर से पहुँचने से मन को राहत मिलती है। चोरों को पकड़ने की दिशा में पुलिस की दक्षता स्पष्ट है। इस तूफ़ान ने घर में सुरक्षित रखी गई केबिनेट को नष्ट कर दिया और उसमें रखी गई क़ीमती डेकोरेशन पीसेज़ बाहर गिर कर टूट गए। मुख्य पात्र सम्पदा को दुःख है कि इस देश से परिचित होने के बाद अनुभवों का ढेरों ख़ज़ाना समेटने के अनंतर एक डॉक्टर, सामाजिक कार्यकर्ता के जीवन में किए गए कई प्रयासों और प्रयोगों से भरी सामग्री केबिनेट में पानी भर जाने के कारण नष्ट हो गई।

केबिनेट को दीवार के सहारे खड़ा करने पर एक कोने में एक काले कवर की डायरी मिलती है। अब इस डायरी में क्या है, जानने को पाठक उत्सुक हो उठता है। सम्पदा को याद आता है, उसे जिस लड़की ने यह डायरी दी थी, उसने उनसे अनुरोध किया था कि वह उस डायरी पर उसके बारे में कुछ लिखें, पर सम्पदा ने उसे उसकी डायरी लौटा कर कहा कि पहले वह स्वयं उस पर कुछ लिखे; बाद में सम्पदा उसका नाम सोनल बताती है। सोनल उनसे एक सामाजिक संस्था में मिली थी। सोनल ने अपने जीवन में बहुत सी घटनाओं, दुर्घटनाओं, विश्वासघात, धोखा और फ़रेब देखा और सहा था, पर उन सबसे बाहर निकल कर उसने अपने अस्तित्व को जीवित रखा और जो कर दिखाया वह सबको सहज प्राप्य नहीं हो सकता।

इसके बाद सोनल के परिवार की कहानी शुरू होती है। गाँव में उसके बाबा जिन्हें सब बाऊजी कहते थे, के दो पुत्र त्रिलोक चँद सोनल के पिता और मंगल उसके चाचा थे। मंगल चरित्रहीन व्यक्ति था। उसका विवाह मंगला नाम की लड़की से हुआ, पर वह भी अच्छे चरित्र की स्त्री नहीं थी। मंगल ने मंगला के भाई के साथ मिल कर गाँव में शराब का भट्ठा खोल लिया था। गाँव वालों ने अपनी परेशानी बाऊजी को बताई। उन्होंने मंगल को गाँव से निकालने के लिए बाहर से आदमी बुलवाए; जो मंगल को गाँव से बाहर निकाल दें और गाँव वालों की परेशानी दूर हो सके। मंगल उसकी पत्नी, उसके भाई और पिता के कुकृत्यों की चर्चा विस्तार में की गई है। सोनल के परिवार के पास कुछ राजसी जेवर और धन था, इसका विवरण उपन्यास में मिलता है। इस ख़ज़ाने के कारण सोनल के मनचंदा परिवार पर लोगों की कुदृष्टि रहती थी। बाद में सुक्खी द्वारा सोनल को बताया जाता है कि उसके घर का ख़ज़ाना उसके बाऊजी, पम्मी और पिता द्वारा सरकारी खाज़ाने को सौंप दिया गया था। सोनल की बड़ी बहन मीनल कॉलेज में पढ़ने वाली साहसी लड़की थी। वह गाँव के युवक पम्मी से प्रेम करती थी। मीनल को मंगल के विरुद्ध की जाने वाली कार्रवाई का पता लग गया था। घर की नौकरानी ने यह ख़बर मंगल को दे दी और उसकी मदद से मीनल की हत्या कर दी गई। भ्रष्ट पुलिस वाले मंगल के हाथों बिक चुके थे अत: पुलिस की मदद नहीं मिल सकी। पम्मी मीडिया के लोगों को लाया था, उसने अख़बारों में पूरी घटना चित्रों के साथ लिखी। उसके बाद पुलिस हरकत में आई और

मंगल को पकड़ा गया। पम्मी एक प्रसिद्ध पत्रकार बन गया था, उसकी लेखनी में शक्ति थी। लोग उसकी रिपोर्टिंग मन से पढ़ते। वह सोनल और उसके परिवार वालों की मदद करता था, उसकी सलाह पर सोनल को चंडीगढ़ पढ़ने भेजा गया।

सोनल ने वहाँ हॉस्टल में रह कर बी.ए और साइकोलौजी में एम.ए. किया। लेखिका ने पंजाब को पीड़ित पंजाब बनाते देखा है। जहाँ पंजाब को भारत से अलग देश बनाए जाने की आग सुलग रही थी। खलिस्तान बनाने के दीवाने अंधाधुंध लोगों को गोलियों से भून रहे थे। पम्मी के आतंकवादियों के विरुद्ध लिखे गए लेखों के कारण पम्मी की हत्या कर दी गई। पम्मी के अलावा सोनल के बाऊजी और पिता भी उन दरिंदों की गोलियों के शिकार बन गए। अकेली सोनल और उसकी माँ, जीवित बची हैं। वह माँ को झाई जी कहती थी सोनल और उसकी माँ के अकेले रह जाने के कारण उसके नाना का स्वार्थी परिवार उनके साथ रहने आ गया। नाना सोनल की संपत्ति हथियाने के उद्देश्य से आए थे। उन्होंने झाई जी को अपने वश में कर लिया और मनमानी करते।

इस बीच सोनल और पम्मी के भाई सुक्खी के प्रगाढ़ प्रेम की जानकारी दी जाती है। दोनों एक-दूसरे से सच्चा प्यार करते हैं, पर प्रकट नहीं करते। नाना सोनल को घर से दूर करना चाहते थे अत: उसके विवाह करने पर ज़ोर देने लगे। सोनल ने सुक्खी से बात करने के लिए संदेशा भेजा, पर जब वह आया तो देर हो चुकी थी। वह पुलिस – सेवा में एस.पी बन गया था। उसकी रुचि साहित्य में थी, पर सोनल की सुरक्षा के कारण उसने पुलिस की नौकरी स्वीकार की थी। उसके आने के पूर्व एक डॉ.बलदेव एक धोखेबाज़ व्यक्ति अमरीका से आ गया। सुक्खी के सामने नाना ने बलदेव की तारीफ़ों के पुल बाँधते हुए कहा कि सोनल ने विवाह के लिए हाँ कर दी है। सुक्खी बिना कुछ कहे वापिस चला गया। सुक्खी से शादी ना करके बलदेव को शादी के लिए हाँ करने के अंतर्द्वंद को बखूबी उभारा और लिखा गया है। यहाँ लेखिका के लेखन कौशल का कमाल है। क़िस्सागोई को कुशलता से वर्णित किया गया है।

वैसे तो इस क़िस्सागोई की कुशलता के प्रमाण उपन्यास में जगह-जगह मिलते हैं। सोनल का विवाह हो गया, पर बलदेव के हाव-भाव से सोनल के मन में शंका जागती है। अमरीका जाने के पूर्व वह अपनी शंका सुक्खी पर प्रकट करती है। सुक्खी उसे एक फ़ोन नम्बर देता है और सतर्क रहने को कहता है। बलदेव के घर पहुँचने पर सोनल बलदेव के लड़कियों के विरुद्ध षड्यंत्र की योजना सुन लेती है। अपने को बचाने के लिए वह खिड़की से कूद कर एक वृद्ध दंपत्ति के घर शरण लेती है। इसके बाद वकील की मदद से सम्पदा सोनल को अपने घर ले आती है। सोनल प्रतिज्ञा करती है , वह जब तक बलदेव को सज़ा नहीं दिलवा लेती, चैन से नहीं रहेगी।

सोनल सम्पदा के घर की सदस्या की तरह सबके स्नेह की पात्री बन जाती है। पुलिस बलदेव की खोज कर रही है, पर कोई सुराग नहीं मिल रहा है। सोनल की सहायता के लिए सुक्खी अमरीका आ जाता है और भारत की नौकरी से त्यागपत्र दे कर अमरीका की यूनिवर्सिटी में इंटरनेशनल लॉ की पढ़ाई के लिए प्रवेश लेता है। सोनल भी उसी विश्वविद्यालय से पीएँच.डी कर रही है। दोनों पढ़ाई में व्यस्त हैं और साथ समय व्यतीत करते हैं। इस बीच भारत से एक फ़ोटोग्राफ़र ने बलदेव की फ़ोटो भेज दी थी। सूचना मिलती है कि बलदेव किसी लड़की के साथ विवाह कर के अमरीका आ रहा है। बलदेव पुलिस द्वारा पकड़ा जाता है। इस तरह से लड़कियों को शादी के नाम से धोखा दे कर उनका व्यापार करने वाले गिरोह का पर्दाफ़ाश होता है। सोनल की प्रतिज्ञा पूर्ण होती है।

सुक्खी और सोनल को उनके मित्र पाश नाम के कवि की उग्रवादियों द्वारा हत्या की सूचना मिलती है। दोनों दुखी मन से पाश के विषय में बात करते हैं.. पाश एक कवि, साहित्यकार, संपादक और बुद्धिजीवी था। हिंसा का उसने विरोध किया और स्वयं हिंसा का शिकार बना। सुक्खी पाश की कविता की पंक्तियाँ सुनाता है। इन बातों से सम्पदा पंजाब में हो रही विश्वविद्यालयों के प्रोफ़ेसर, विद्यार्थी, बुद्धिजीवीयों की हत्या से क्षुब्ध दीखती है।

सुक्खी और सोनल अपनी पढ़ाई पूर्ण कर के भारत वापिस जाते हैं। मंगल के परिवार और उसकी लड़कियों का दुखद प्रसंग आता है। मंगल अपनी चरित्रहीन पत्नी को अपनी बर्बादी का कारण बता कर झाई जी से क्षमा माँगता है। सुक्खी और सोनल हवेली में बच्चों का स्कूल शुरू करते हैं। स्कूल का दायित्व झाई जी, मास्टर जी और माँ को दिया जाता है। तीनों को जीने की राह मिल गई। सुक्खी और सोनल दोनों पेरिस चले गए और वहाँ विश्वविद्यालय में पढ़ाते हुए भारतीय लड़कियों को शोषण से बचाने, पंजाब के प्रतिभाशाली बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाने तथा गाँव में डॉक्टरी सुविधाएँ उपलब्ध कराने जैसे कल्याणकारी कार्य करते हैं।

अंत में सम्पदा के कुछ मित्रों के आ जाने से माहौल बेहतर हो जाता है। ये लोग काफ़ी कठिनाई के बाद उन तक पहुँच सके हैं। कबिनेट को टूटा देख कर वे दुखी होते हैं। केबिनेट के साथ सोनल की यादें जुड़ी हुई हैं। अचानक केबिनेट से एक पत्र निकलता है। यह पत्र सम्पदा ने अपनी माँ को लिखा था, पर मेल नहीं किया गया। मेरे विचार में केबिनेट से वह पत्र मिलना सबसे महत्वपूर्ण सौगात है। पत्र बहुत ही मर्मस्पर्शी है, जिसमें सम्पदा के माध्यम से लेखिका ने भारत से अनजान देश में पहुँचने पर अकेलेपन की पीड़ा साकार की है।

अंत में यह निर्विवाद सत्य है कि शीर्षक की तरह ही उपन्यास के रोचक तत्व पाठक को बांधे रखते हैं। लेखिका की भाषा शैली सशक्त है। कठिन विषय पर भी उनकी कलम आसानी से चलती है। भय और आतंक के बीच भी प्रेम की चिंगारी सुखद लगती है। सुक्खी और सोनल का सच्चा प्रेम खालिस्तान के आतंक के भय से भी विचलित नहीं होता।

अंतत :नक़ाबपोश केबिनेट टूट जाने के बावजूद भी एक पत्र को सुरक्षित रख कर पुरानी यादों का साक्ष्य बनता है।

सुधा ओम ढींगरा
+1 919-801-0672
sudhadrishti@gmail.com